भारतीय वन सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों (Indian Forest Service Probationers) का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान भ्रमण

(दिनांक 12/3/18 एवं 17/3/18)

I. भारतीय वन सेवा के 2017 बेच के 49 प्रशिक्षु अधिकारियों ने संकाय सदस्य श्री बी. बालाजी, भा.व.से. के नेतृत्व में दिनांक 12/3/18 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया। भ्रमण के प्रारम्भ में संस्थान की निदेशक डॉ. रंजना आर्या ने पावर-पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान एवं संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी करायी । डॉ. आर्या ने शुष्क क्षेत्रों में नमक प्रभावित भूमि का पुनर्वासन, औषधीय पौधे, गुग्गल नेटवर्क प्रोजेक्ट, वृद्धि एवं प्राप्ति मॉडलिंग (Growth & yield Modelling), अकाष्ठ वनोत्पाद का पादप-रासायनिक मूल्यांकन एवं मूल्य-संवर्धन (Phytochemical Evaluation and Value Addition of NTFP), डॉ. जी. सिंह ने सतही वनस्पति द्वारा टिब्बा स्थिरीकरण, वनीकरण, मृदा एवं जल संरक्षण के लिए सूक्ष्म संरचनाएँ (Micro-Structures For Afforestation, soil & water conservation), जैव विविधता का आंकलन (Biodiversity Assesment), जल प्लावित भूमि का जैव जल निकास से पुनर्वासन (Biodrainage to reclaim waterlogged areas), जल प्रबंधन (Water Management), राजस्थान के वनों में कार्बन प्रच्छादन (Carbon Sequestration in Forests of Rajasthan), डॉ. तरुणकांत ने एक्सेसन (Accession) का चयन एवं सूक्ष्म प्रवर्धन (Selection of Accession and Micropropogation), उत्तक संवर्धन एवं डी.एन.ए. फिंगर प्रिंटिंग (DNA fingerprinting) इत्यादि की जानकारी दी। परस्पर संवाद से प्रशिक्षु अधिकारियों की जिज्ञासा का भी समाधान किया गया।

तत्पश्चात प्रशिक्षु अधिकारियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित शोध संबंधी सूचनाओं एवं सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ पर श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. एवं प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने प्रशिक्षु अधिकारियों को केंद्र से संबन्धित जानकारी दी। भ्रमण कार्यक्रम का समन्वयन श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने किया। भ्रमण कार्यक्रम में श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी का सहयोग रहा।

II. दिनांक 17/3/18 को भारतीय वन सेवा के 47 प्रशिक्षु अधिकारियों ने कोर्स डाइरेक्टर डॉ. के. शशिकुमार के नेतृत्व में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने पावर-पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान एवं संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी जिसमें शुष्क क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी / सिल्वीपेस्टोरल मॉडल, सतही

वनस्पति द्वारा टिब्बा स्थिरीकरण, वनीकरण, मृदा एवं जल संरक्षण के लिए सूक्ष्म संरचनाएँ (Micro-Structures For Afforestation, soil & water conservation),), लवण प्रभावित भूमि का पुनर्वासन, जल प्लावित भूमि का जैव जल निकास से पुनर्वासन (Biodrainage to reclaim waterlogged areas), जल प्रबंधन (Water Management), राजस्थान के वनों में कार्बन प्रच्छादन (Carbon Sequestration in Forests of Rajasthan), बीज परीक्षण विधियों के ट्रेट्स एवं विकास का अध्ययन (Studies on Traits and development of seed testing protocols), औषधीय पौधों का अध्ययन (Studies on medicinal plants), उत्पादकता वृद्धि हेतु ए.एम.एफ./ जैव उर्वरकों की भूमिका (Role of AMF/Biofertilizer for Productivity Enhancement), गुग्गल नेटवर्क प्रोग्राम (Guggal Network Program), अकाष्ठ वनोपाज़ में पादप-रासायनिक मूल्यांकन एवं मूल्य-संवर्धन (Phytochemical Evaluation & Value Addition of NTFPs), शहरी सौंदर्यीकरण वनारोपण (Urban Aesthetic Afforestation), पौधारोपण सामग्री का सुधार (Planting Stock Improvement) इत्यादि विषयों से संबंधित जानकारी भी शामिल थी। डॉ. जी. सिंह एवं श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से., प्रभागाध्यक्ष कृषि वानिकी एवं विस्तार ने परस्पर संवाद के माध्यम से प्रशिक्षु अधिकारियों की जिज्ञासा का भी समाधान किया।

प्रशिक्षु अधिकारियों के दल ने तत्पश्चात संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित अनुसंधान संबंधित विभिन्न सूचनाओं का अवलोकन किया। श्री उमाराम चौधरी ने विस्तार एवं निर्वचन केंद्र पर प्रशिक्षु अधिकारियों को जानकारी दी। भ्रमण कार्यक्रम का समन्वयन श्री उमाराम चौधरी ने किया। भ्रमण कार्यक्रम में श्री धानराम, तकनीकी अधिकारी का सहयोग रहा।